1. Acc. No: → 50529. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

2. Acc. No: → 50530. नामदेव जी की परिचई

3. Acc. No: → 50531. तिलोचन जी की परिचई। अनन्तदास कृत।

4. Acc. No: → 50532. अंगद जी की परिचई by- अनन्त दास।

5. Acc. No: → 50533. प्रह्लाद लीला।

6. Acc. No: → 50534. कबीर के दोहे।

7. Acc. No: → 50535. शकुनावली।

8. Acc. No: → 50536. सुखदेव लीला।

9. Acc. No: → 50537. ध्रुव चरित्र।

10. Acc. No: → 50538. कलजुग पचीसी

11. Acc. No: → 50539. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

अथ सुषदेव लीला लीष्यते ॥ गुर प्रसाद कथा जनि गुनी ॥ ते बुधि हीहीतिर नवन धनी ॥ कीरति बरनु कीर मुनि की ॥ साची सार परी जिन की ॥ कैसे जपे कहे कि निमे ॥ कि हिगुन सिध जये सुषदेव ॥ उजल बानी बुधि परगास ॥ मुनि गुन बरनै मुरलीदास ॥ प्रथम पार्बती पे के समै ॥ संकर सूर छ तुमे ॥ तुम सत्त सरि स कौन अधिकंत ॥ ताको ध्यानु धरौ नित न्यंत ॥ स्यंभू कहे

वेअगमअपार॥तरनतारनवेस
रजनहार॥इद्रअसंषिकरैरत
नैम॥रोमरोममेकोटिकब्रंम
कोटिककलाधरैभगवंत मो
सेसपंचूलगेअनंत॥हेमसुता
कहैसुनिहोजति॥परदामतरा
बोयेकेरती॥उनकीकथासुना
औरेव॥आपसमानअमरक
रलेहू॥हुंकेकथासुनाउतिरी
कारीअधिकप्रानतेबरी॥जलथ
लजीवसुनैगेजिते॥तुरतमुकति
होहजेतिते॥चलीयेकथासुनै

यंकंत॥ जहानपंछीजीवनजंत॥ जा
वजंतपंछीपसुपास॥ तेसबछैहिंदि
येबनवास॥ उडिगये पंछीहरषन
कोई॥ सूवायेकरह्यौमुष गोई॥ ज
बपारबतीचहूदिस देषी॥ स्वामी
कहीयेकथाबिसेषी॥ यंब्रतबच
नेउचारेमुनी॥ अरसपरसपार
बतीसुनी॥ सबहीकौचूरणतत
सार॥ निंद्राचूरीगईतहिबार॥ आ
रधसुनतहीकररिगयेसैन॥ ला
ग्यौकीरहूंकारादेन॥ सबदसब

द के करै न खेदा ॥ स्यंभू नाथ नजा
नै भेद ॥ कहत कबीर सं सूर न भई
तब अरधंगी चेतन्य पाई ॥ कहै
नाथ सु मलि मलि नैंन ॥ आ
रै गये तुम्हारे बैन ॥ कासूं कही
सुनत हो कोइ ॥ हम तो अलष
सुनत जाये सोइ ॥ इतनी सुनि करि
तजे पीराना ॥ तुरत चतुरत भये मुक
ति परवाना ॥ देषत स्यंभूप करो धा
धाय ॥ रहि रहि पंषी तुम कित जाय
कहो स्यंभू जिनी करो बिजोग ॥

पंछी लागे नैं नैं पाप ।। मूक्ति होत न
देस्यं मूराय ।। रहू पंछी तु अबकी
बारा ।। बडी मौज मनी बा औ तारा
ब्यास अपु त्री चाहे हैं बंस ।। तिनि कु
ल कू षि धरे तु महेस ।। मुक्ति होत
ते राख्यो घेरि ।। जैपानी संकट आ
यो फेरी ।। जठर अगपनि त्रास अ
ति सहे ।। द्वादस बरस गर नतप
कीनै ।। तब कर तानि जुररसनु
रियो ।। ररस न ही मे मयर सन न
ये ।। जनम जनम के पातग गये

तोकों न पुरिष तो हि अगम सुझै
हरद वंधकों हरद न बूझै ॥ तेरी
ज्ञमीडु षपावै मे पीर ॥ तू सुषदा
यक अकदावन गीर ॥ इ छोज
न नीकू जोदुषु होइ ॥ तो हमते नाहि
अपराधी कोइ ॥ तो तबे हेह धरि
बूझी बाता ॥ तो ही सुषहै अकदु
षरी जाता ॥ मा ताक हे पुत्र कै ने
व ॥ दुष न ही देइ पुच सुषदेव ॥ ज
बतै आसा बधस नेह ॥ तबतै पा
ने फूलसी देह ॥ जुगल्लबे जुगासु

२हि ५॥

चिमचेंन॥ जबदेष्यौपुत्रहिनरीनै
न॥ इतनासुनिसुतसुकसूकही॥
तुमसाचेहोसुषदेवसही॥ बाह
रजीतरयेकहीजानै॥ प्रगटहोह
रिषबाचामानै॥ तौकैसेंमानै
जानपरबीन॥ तुम्हरीमायासक
तीमैमसकीन॥ अपनीमायाथे
त्रिपुरारी॥ तिनबडेबडेसिधबसी
कीयेमारी॥ मायाथैंचेमनुपतिआ
ई॥ बिनबेंचेकोबाहीरजाई॥ माया
थैचीग्रनुतिलनरी॥ रिषसुषदेव
नयेतिहघरी॥ अबलागावैमंग

लचार॥नौनाथचौरासीअजी
लंगी॥इतनेजनमेयेकहीसंग
यतनैजनमैअधिकपरवान।
ज्योंरजनीउउपतिदिनपतिअ
ने॥समदिष्टिसीतलसुखदेव॥ज
नेमतहीकेसीलगंगेव॥तोहउ
प्रचंडकमउललीह्वा॥बनकू
रमतबिलमनहीकीना॥विमुन
कीनोंबनरमैं॥धरिहिरदैबिस
वास॥कहिमुरलीपीछेपरेटेर
तआवतब्यास॥२॥टेरिब्यासआ
यनयेआउ॥अरेपुत्रहमकल
पतहीछाडे॥ईतनीबातकहैअद

धूता॥कौंनपिताकोकाकोपूता॥पि
ताबिधाताबिननहिकोई॥ग्यानमा
नपूरिषक्यौंहोई॥जैसैपंछीबिर
षबसेरा॥रातिबसैंदिनउठुसवेरा
जैसेंजुरेबहुहाटहटोवा॥अंतबार
कीबारबटोवा॥ऐसेंकरिनिरषेंसं
सारा॥सोईपिताऔरुगुरूहमारा
इतनीसुनिपुत्रकीबाता॥जननी
करतबहोतअपघाता॥पिताप
रेधरनीसिरढुरही॥सुनिकरुना
इडासनटरहीं॥अबसीअबसी
उरबसीबुलाई॥आभूषनसजि

हाजरि आइ ॥ हाजर है आगैंन
इठाढी ॥ पति सूं कहति कहा परी
गाढी ॥ तुम तो बड़ी मोहु की दा
सी ॥ बडे बडे मुनि मोहे हासी ॥
अब की बार जो भुव मैं जैयें ॥ का
जसरै तो बीरा षायें ॥ गर्ज जती
जोगेसुरसारा ॥ ग्यान तुरंगनि
को असवारा ॥ है तो नीति मुक
ति की ऐसे ॥ मति कबहू षंडा
सन बैस ॥ वाको उर मोहि ला
गतु भारी ॥ जाइ देहु तपु वाको
टारी ॥ आयस मागी उरबसी

चली॥ लायक इक येक येक तें म

ली॥ बैठि बिवाननि पकु चीत हां॥

निज सुब सुंदर बैठे जहा॥ ठाढी

नई जाई मुनि आगे॥ चरन कक

वलनि धुकि लागे॥ करि करि नव

नि निरत कूं उतरी॥ लायक येक

येक गुन सुघरी॥ बिचं बिच बाजे

अधिक बजावे॥ तान बधान स

त सुर गावे॥ मानो दामिनि चम

कै घन गहरें॥ फिरें चक्र गति बस

तर फहरें॥ अति तत कार करें चली

जाई॥ कुच कपोल पंकज द्रिग ला॥

ई॥ अतिनिलज बदन नही ढकैं
बदन कों जतन करत नही सकें॥
तब निरषि बोले सुषदेव गुसा
ई॥ जननी कौं नु कहां ते आई॥ उ
तिपति आदि यंद्रपुर गाव॥ जहा
बसै उरबसी नांव॥ पति सूंरो
स बिरस करि निकरी॥ फुरि षनि
हारत डोलत सगरी॥ सप्त द्विपति
हूं लोक मझारा॥ कहूं न बन्यो संजो
ग हमारा॥ फुरि न पावे अपने मन्न
कों॥ चतुर बिबेकी उजल तन कों
अबचितु चलैं न चई अपं॥ [illegible] गा

करौदेव अपनि अरधंगी ॥ जननी
जोरजोर जु त्नमुजिन भाषै ॥ कूरब
चनजिनि हमसौ भाषौं ॥ मेघुनक
रमुतुम संकरीये ॥ दिपग अछित
कूपमैपरीयें ॥ तुम कहा संकर तेअ
घिकारी ॥ जिनकैं संगपारबतिना
री ॥ ताकरन हरनपुरिषअबिना
सी ॥ जिनकेचरनपलोटै कमला
दासी ॥ तुमही कहाअनिनिनयं
देवा ॥ चरनैं समीप करनुदेहुसेवा
याबनि आई तुम्हरी आसा ॥ दिन
रसकीजेचोगबिलासा ॥ हमकरि
आयि आसतुम्हारी ॥ तुमजिनना

हीं राह हमारी ॥ तौं सब बात न की
ये कही बाता ॥ हम बाल क तुम
धरम की माता ॥ तौं मासु मात
बहनि सू बहनी ॥ ऐसी बात ब
हुर नहि कहनी ॥ तौं अजहूं सज
न संग इ राषों ॥ तप कौ तेज न्नो
ग फल चाषों ॥ तौं अजहूं सम
झो करो विचारा ॥ जहा जो हुरा
जे कुंवारा ॥ वै तौ पान फूल केरो
जी ॥ वै तुम लायक तुम वनजो
जी ॥ हम अतित आतम आधा
री ॥ अनत जाहु बर हूंढो नारी ॥

अनत जाउ मुरली कहै ॥ जहां रेहै रसरंग ॥ हमपकी रतुम उरबसी सोहत नाही संग ॥३॥ इतनी सुनि सुहरि सुकचांनी ॥ बोलति महा दिन कै बांनी ॥ धनि धनि तुम्हरे अंतरजांमी ॥ धनि जननि तुम जाए हीरा ॥ कौं न हि काज सैंती केकीरा ॥ उलटि उर बसी कीयो पयानो ॥ जायई द्रद स्रं कही कहानी ॥ अउ गिन ढिगैं औहठा ग्यानी ॥ हमछलपबे कूं कीनी बहुघाता ॥ वाकें ऐ कहू न आवै गाता ॥ तो इतनी सुनी सुनि सुरप

तिस्नूकें॥सुरततीसोठाढेकूके॥ब्र
ह्मलोकव्रम्हाघरहुरानु॥तबनारा
यणसुषदेवजांन्यो॥कहेपारब
तसुनोभगवानो॥आयसुदेहु
तौंलेजांहिबिवानो॥देषिबिवान
उठेमहराई॥मिलेकंठसूकंठलगा
ई॥सुषदेवबैठिबिवानमनधारी
मीलनचलेमनघमूक्तिमुरारी॥
तबैंगयेबैकुंठदुवारा॥द्वारपाल
पठयेबिचारा॥तुम्हरेंद्वारेआयेसं
त॥आपसदिजैकमलाकंत॥आ
यसुदेतौआजेंआवे॥बिनआप

सुकैसें आइ पावै॥ गुरमुषी ज्यानी
आवनी संक॥ बिन गुर दिजें आडी
अंक॥ उलटि पोरिया पोरी आया
समांचार सुषदेव सुनायो॥ तो कहा
कही अबै सरापु तोही॥ अनाहक
पाप लगायो मोही॥ तब लिला फेरी
भगवंत॥ तुरत ही रचे बैकुंठ अनंत
कुछू कुछू सोवत सें जागो॥ तब
सुन बानी बांनी बोलन लागे मा
तोंडा रीत तु बिचारो आपो॥ जनक
बदेही गुर करि थापो॥ ते बिवानपा

रषतधाये॥ जनक बिदेही कें मंदिर
आये॥ ठाढे पहर द्वै तबै बिचारे॥ पी
छे आदर दे बैठारे॥ देषाये त आदु
ज और मति नारा॥ नावहमारे
रहे न छानी॥ रिषसुषदेव जग
त नै जानी॥ अपनै मन न हीं माहीं
बडे रे॥ तुमसु रिषि सुषदेव घने
रे॥ जो लगि नांव पि ताकौ न सारें
बधे नहि परतीति हमारें॥ तब सुष
देव पितासनारे॥ ब्यास कहत के
ई कुल त्यारे॥ तु बै ब्यास मन म
हि मन आनंदे॥ धानि धनि राजा
तिहारे चरण के वल हम बंदे॥ ई

नकैमुषतुमनाव़लिवायो कृआपरा
धीभरतजीवाया ॥ इकलगबसेजहा
लगिनगरी ॥ पारिकर्मादैआवासा
गरी ॥ करपरभरिकरिधरीकटोरी
मांमोत्यिचितव़तचंदचकोरी ॥ देपरि
कर्माआयेजहा ॥ जनकबदेहीबैठेत
हा ॥ लेकरीराजाआगेधरी ॥ देषैनिरषि
चरीकीचरी ॥ तबराजारांनीनिजकहि
कहानी ॥ तुमअबला ॥ प्रतिचतुरखां
नी ॥ तुमसुषदेवजायकरिदेषो ॥ परप
कहोइतोफरमैलेषो ॥ तबसुषदेवपरु
लपगाया ॥ रांनीनवस्त्रआधिकबना
ये ॥ तबरांनीसुषदेवकितालें ॥ सुषदेवम

तब हरणा कहि बोले ॥ जोति उज्यारें मा
रग छोरें ॥ जननि जाह सुषदेव निहो
रें ॥ सुषदेव मात बहनी कहि सोये ॥ च्या
रपहर जागत हि षोये ॥ रजनि गई च्नेहा
च्नांनसारा ॥ तब उठी सुंदरि चिरसं
च्नांरा ॥ तब रानी राजासू कहि ॥ सुनो
राय च्नाजु च्नैसी च्नई ॥ च्नाजु हमारे
संगि न कोई ॥ पौ के रंग महल हमे
दोई ॥ रजनी चतुर पहर बुधि कीनी
माता कहि कहि पुत्र जगतिं लीनी ॥ मा
ता कहि नारि सब जानें ॥ पन मेरस
र कूं साति करि मानैं ॥ पुत्र पुत्र करि
रहौ ढिग सेंन्नी ॥ ईह व्याधि बोई स

श्रीगणेशायनमः हरिहिमगुचि ॥

परमपुरुष माद्यबालकृष्णं नमामि

गरारें नी ॥ परपक बिसवा बीसगुसाई
येकबिसेकी जो नूनाही ॥ किरपावंतहै
किरपाकिजे ॥ जानिदीनकूं दछ्यादीजे
ऐसे परचे लगे तुरंत ॥ सुषदेवकी येद
छ्यावंत ॥ गुरसिषदोउ करनिसार ॥ बा
ढी लिला अगम अपार ॥ पारब्रह्म
पने पे फूल्यौ ॥ अपनु जानि आपमैं ली
नैं ॥ गुरभगवान आग्यां लई ॥ बानी भ
ई प्रगास ॥ रतन बिपुल सुषसिध भये
सो कथ्य गुन मुरलीदास ॥ इति सुष
देव लीला संपूरण समाप्तं ॥ श्री रस्तु
संबत १८२७ वर्षे मीती कार्तीग वदी ३
ऐतवार लीषतं गंगाराम

पठनार्थं लाला गंगादास: जी बतौग